बात साहित्य और विजयदान देथा

*डॉ. गोकुल चन्द सैनी

राजस्थानी में विजयदांन देथा की लगभग सात सौ कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी है, जिनमें से अनेक का हिन्दी में अनुवाद नाटयरुपान्तर और सफल मन्चन हो चुका है। कुछ रचनाओं पर फिल्में भी बनी है। राजकमल प्रकाशन ने इनकी कहानियों के दो संग्रह 'दुविधा' तथा 'उलझन' प्रकाशित किये हैं। पहले खण्ड दुविधा में जहां इक्कीस कहानियां हैं, वही दूसरे खण्ड में अठारह कहानियाँ तथा एक लघु उपन्यास। विजयदांन देथा की ये कहानियाँ गम्भीर और सामान्य पाठको को कहीं गहरे तक प्रभावित कर जहाँ सस्ते फुटपाथी साहित्य से जंग कर सकने का माद्दा रखती है, वहीं हिन्दी के नये–पुराने कथाकारों को यह बताने में भी सफल होती है कि कहानी में गम्भीरता और पठनीयता का गुण एक साथ कैसे लाया जा सकता है? अपनी बहुचर्चित कहानी 'उलझन' में वे लिखते है– आदमी, आदमी होता है, कोई ताकतवर,कोई कमजोर। कोई अमीर, कोई गरीब। कोई चतुर, कोई अबूझ। सब माहौल और सोहबत का असर है। बनजारिन की यह बात सुनकर कोई तीर जैसे बनजारे के कलेजे पार हो गया। हैरानी से आँखे सिकोड़ कर वह कड़कती आवाज में बोला माहौल! सोहबत। मेरी पत्नी होकर तू ऐसी बातें करती है ? भला पुरखों का कहा कभी गलत हो सकता है।जैसा बीज, वैसा दरख्त, आक के आक ही लगेगा, आम नहीं।खानदानी तासीर को कैसे झुठलाया जा सकता है।

इस तरह के विचारों के नहले पर दहले से पगी हुई विजयदांन देथा की ये कहानियां पढ़ने के बाद पाठक कई दिनों तक उनके प्रभाव में यों बहता है कि कुछ और पढ़ने की इच्छा तक नही होती। कहानियों का एक–एक शब्द, कहावत और मुहावरा अपनी सार्थकता प्रमाणित करता है। हिन्दी का पाठक इन कहानियों को पढ़ कर एक बारगी यह सोचने को बाध्य होता है कि समकालीन हिन्दी कहानी के पास एक भी विजयदांन देथा क्यों नहीं है ?

इसके अलावा देथा जी की कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद कर चुकी लेखिका मृदुल भसीन ने दैनिक भास्कर (अखबार) में रविवार, 5मार्च, 2006 में उनके तिलिस्म को इस प्रकार प्रस्तुत किया है– "बिज्जी के पास मानवीय आंखो के अलावा मन की भी आंख है। जों सृष्टि के किसी भी कोने तक उनकी कलम को पहुंचा देती है... बिज्जी राजस्थान की लोक–कथाओं में लोक मानस से जुड़ी भावनाओं को पकड़ सके इसी लिए लोक कथाओं के बीज रूप को वह एक पूरी कहानी का रुप देने में सक्षम हुए। बिज्जी ने अपने मित्र पदम श्री कोमल कोठारी के साथ 'रूपायन लोक संस्थान' की स्थापना की थी, जिससे उन्होने लोक संस्कृति और कला के क्षेत्र में काम किया। उनमें एक बड़ा हिस्सालोक कथाओं के संकलन का है। ये कथाएं जनमानस की निर्मित है।वाचिक परम्परा से बनी हैं और कथा वाचन के माध्यम से ही आगे बढती है। कोई आश्चर्य नही कि सारे संसार कौ लोक कथाओं की तरह राजस्थान की लोक कथाओं में भी क्रांति के सूत्र छिपे है। हर लोककथा का नायक कोई छोटा जानवर या अदना–सा व्यक्ति होता है, जो अपने चातुर्य और पराक्रम से जमींदारी को ठेगा दिखाता है और चल देता है। अगर इन कथाओं में जमींदारी प्रथा के प्रति आकोश है, तो नारी मुक्ति की आग भी। कदाचित् विजयदांन देथा ने चुनकर उन लोक कथाओं को ही लिया, जिनमें स्त्री किसी न किसी रूप में अपने शोषण की अभिव्यक्ति करती है या प्रतिकार।1

पूर्ण ग्रामीण परिवेश में रहें किन्तु खासे कम्युनिस्ट विचारधारा वाले बिज्जी रहन–सहन में ग्रामीण है। जिस तरह उनकी गंवई नारी स्वतन्त्र चिंतन रखती है, उसी तरह गाँव में रहकर भी बिज्जी की कल्पना, संसार और

ब्रहमांड के विस्तार को छूती है। बिज्जी की हर कहानी इसका उदाहरण है। बोरूदा गाँव में बैठा कथाकार विजयदांन देथा अपनी टोकरी में ऐसी हजारों कथाएं लिए है, जिनकी कल्पना हॉलीवुड की फिल्में तक नहीं कर सकती। इन कथाओ की संवेदनात्मक गहराई के सामने आजकल के सारे टी.वी. धारावाहिक ओछे और भौडेनजर आते है। अपनी धरती की सच्चाई में सारी दुनिया के रंगों को देखना और उन्हें दृश्य माध्यम से दिखा पाना हर किसी के बस की बात भी नहीं।

लोक कथाओं पर आधारित इनकी कहानियों को पढ़ते हुए बार–बार यह लगता है कि तमाम ऐतिहासिक परिवर्तनों और भिन्नताओं के बावजुद कुछ विषय ऐसें हैं जो प्राचीन लोक–कथाओं से लेकर आजतक के मनुष्य को उद्देलित करते है। राजस्थान की ढाणियों मे रात–रात भर चलने वाली इन कथाओं में स्त्री–पुरूष सम्बन्धों की पूरी जटिलता को बिना किसी संकोच अथवा लिप्सा के उभारा गया है।

देथा जी के बात साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर गत पृष्ठों मे संक्षिप्त रूप सें विवेचन करने का प्रयास किया गया है। बात साहित्य के उद्भव, विकास एंव विभिन्न अंगों (कथातत्व, चरित्र वातावरण, भाषा शैली आदि) की विशेषताओं, भाषा निर्माण में उसका महत्वपूर्ण योग एंव उसकी सामाजिक उपादेयता पर सविस्तार विचार करने की मेरी आकाँक्षा रही है। राजस्थानी जीवन और उसकी संस्कृति की झांकी बात साहित्य में सुस्पष्ट–तौर से देखने को मिलती है। जो भी व्यक्ति राजस्थान की संस्कृति और सामाजिक जीवन से परिचित है उसे यह बात समझने में तनिक भी कठीनाई नहीं होगी कि राजस्थान का बात साहित्य यहां की संस्कृति से कितना निकट सम्बन्ध स्थापित किये हुए है। सूर्य की रोशनी समाज और व्यक्ति के मन के गहरे अंधेरे में पहुंची या नही पहुंची यह कह नही सकतें, किन्तु बातों की उज्ज्वल किरणों नें अवश्य समाज और व्यक्ति के अन्तर को प्रकाशवान बनाया है।

राजस्थान में बातों का विपुल भण्डार है। विभिन्न भाषाओं के हस्तलिखित ग्रन्थालयों में बातों के अनेक संग्रह विधमान है। इसमें सें अधिकांश अप्रकाशित ही है और इन्हे प्रकाश मे लाना अत्यन्त आवश्यक है। अब तक बातों की जो सामग्री प्रकाशित हो पाई है वह इतनी कम है कि उसे नहीं के बराबर ही गिना जा सकता है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में राजस्थानी विद्वानों द्वारा यें बातें समय–समय पर प्रकाशित हुई और होती जा रही है। विजयदांन देथा के जो बातों के संग्रह प्रकाशित हुए है वे निम्नलिखित है –

1. बातां री फुलवाड़ी भाग –1 विजयदांन देथा
2. बातां री फुलवाड़ी भाग–2 विजयदांन देथा
3. बातां री फुलवाड़ी भाग–3 विजयदान देथा
4. बातां री फूलवाड़ी भाग–4 विजयदांन देथा
5. बातां री फुलवाड़ी भाग–5 विजयदांन देथा
6. बातां री फुलवाड़ी भाग–6 विजयदांन देथा
7. बातां री फूलवाड़ी भाग–7 विजयदांन देथा
8. बातां री फूलवाड़ी भाग–8 विजयदांन देथा
9. बातां री फुलवाड़ी भाग–9 विजयदांन देथा
10 बातां री फुलवाड़ी भाग–10 विजयदांन देथा

राजस्थान का बात साहित्य आज भी जन साधारण के कंठो में ही जीवित है– अतः उसके मूल्यांकन की दिशा में मेरा देथा जी के साहित्य पर लिखा गया यह शोध प्रबन्ध केवल भूमिका के रूप में ही देखा जा सकता है।

सम्पूर्ण बात साहित्य के मूल्यांकन का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता, उसके विस्तार को छू पाना भी अब तक संभव नहीं हो पाया है। इस क्षेत्र में यदि कोई वस्तु परमावश्यक हो सकती है तो वह है लोक–मुख पर बहती हुई बात साहित्य की इस धारा को लिपिबद्ध करने का कार्य। यह कार्य जितना शीघ्र सम्पन्न हो उतना ही श्रेष्ठ होगा क्योंकि मेरी यह मान्यता है कि समय के साथ 'बातों' की इस मौखिक परम्परा के नष्ट हो जाने का भय है। देथा जी ने इस सम्बन्ध में जो भी कार्य किया है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है।

आज युग बदल गया है युग के साथ–साथ समस्यायें भी बदल गयी है, जीवन का स्वरूप बदल गया है, मनोरंजन के साधन भी बदल गये है किन्तु राजस्थानी बातों की मनोरंजकता आज भी उसी रुप में विद्यमान है। आज जिन विषम परिस्थतियों में से व्यक्ति गुजर रहा है उसके लिए यह संभव नहीं कि वह फुर्सत के साथ बैठकर इस परम्परा को जीवित रख सके। यह अतिशयोक्ति न होगी यदि कहा जाय कि जीवन–यापन और सामाजिक–असुरक्षा ने मनुष्य को आज इतना झकझोर दिया है कि इन्हें सुलझाने में वह स्पूतनिक की तरह घूम रहा है। उसकी रागात्मक प्रवृतिया यदि समाप्त नहीं हुई है तो वे इतनी दबगई है और उसके कार्य–कलापों से इतनी दूर चली गईं हैं कि यदि इस दिशा में ठोस प्रयास नहीं किये गये तो उसमें छिपे हुए साहित्य–सृष्टा और सहृदय पाठक को क्षति अवश्यंभावी है। यह प्रश्न मूल रूप से स्वतन्त्र समस्या प्रस्तुत करता है किन्तु जहां तक प्रस्तुत विषय से इसका संबंध है इतना मानना पड़ेगा कि यदि इस दिशा में सतत प्रयत्न नहीं किये गये तो मौखिक साहित्य के, जिसमें बात सहित्य प्रमुख है, नष्ट होने की पूरी संभावना है और हो सकता है कि वह एक दिन मोहनजोदड़ों की ईंट बन जाए कि जिसे पुनः खोदकर निकाल लाना बहुत महंगा पड़ेगा। अतः साहित्य सेवियों और रसिकपाठकों के सम्मिलित प्रयास द्वारा बात साहित्य को लिपिबद्ध करने की दिशा में अविलम्ब प्रयास किए जाने चाहिए। यह साहित्य केवल जन–जीवन की झाँकी मात्र ही नहीं है अपितु बातों ने इतिहास की टूटीहुई लड़ियों को जोड़ने और अज्ञात व्यक्तियों और घटनाओं से परिचयपाने में महान योगदान दिया है। इनका स्वागत करते हुए श्री अगरचन्द नाहटा ने कुछ सुझाव दिए है। "इस तरह राजस्थानी बातों का बढ़ता हुआ प्रकाशन अवश्य ही उज्ज्वल भविष्य का सूचक है और ऐसे प्रयत्न निरन्तर होते रहने की आवश्यकता भी है। पर इससे भी अधिक आवश्यक है इन बातों का आधुनिक शैली में लिखा जाना, जिससे वे केवल विद्वानों के उपयोग की ही चीज न रहे, जन–साधारण भी उनका रसास्वादन कर सकें। वास्तव में राजस्थानी बातों पर आधारित उपन्यास, नाटक, कहानी आदि अधिकाधिक लिखे जाने चाहिए और फिल्म जगत में भी उनका समावेश होना चाहिए जिससे जन–साधारण को अपने पूर्वजों का गौरव विदित हो और उनके उज्ज्वल चरित्र की अमिट छाप उन पर पड़े। हिन्दी में भी राजस्थानी बातों पर आधारित नए साहित्य का सर्जन अधिकाधिक किया जाना वांछनीय है।2 मानवीय कृतित्व और कीर्ति को अमरत्व देने का साधन साहित्य से बढ़कर कौनसा हो सकता है, प्राचीन गीतों और बातों के बारे में कहा गया है कि भव्य भवनों और किलों के ढ़ह जाने पर भी ये शताब्दियों तक अपना अस्तित्व समाज के पटल पर बनाए रखने में समर्थ हैं।

***व्याख्याता– हिन्दी**
स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय,
खेतड़ी

संदर्भ

1. दैनिक भास्कर समाचार पत्र के रविवार, 05 मार्च 2006 में छपे लेख के अनुसार।
2. राजस्थान का सांस्कृतिक प्रवाह–राजेन्द्र शंकर भट्ट की पुस्तक में अमरचन्द नाहटा का सुझाव।